Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue March 2023 | Impact Factor 5.320

हरियाणवी महिलाओं की हिंदी सिनेमा में प्रस्तुति: एक अध्ययन

NARENDER SONI
Research Scholar, Department of CMT, GJUS&T Hisar (Haryana)
SUNAINA
Assistant Professor, DDE, GJUS&T Hisar (Haryana)

भूमिका

आधुनिक दौर में सिनेमा को पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा प्रभावी व लोकप्रिय मनोरंजन के साधन के रूप में देखा जाता है, सिनेमा लोगों का मनोरंजन करता है साथ ही जीवन को जीने की एक दृष्टि भी देता है। सिनेमा के जन्म के साथ अन्य जो भी तकनीकी प्रयास वैश्विक स्तर पर हुए भारत ने भी कदम से कदम मिलाया और दुनिया का सर्वाधिक फिल्म निर्मित करने वाला देश बना। (तस्माय लाहा रॉय)

सिनेमा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को अंकित करने का एक सशक्त माध्यम है, सिनेमा हमें नई-नई संस्कृति और परंपराओं से अवगत कराता है चूंकि सिनेमा समाज का दर्पण है, और समाज सिनेमा का प्रतिरूप है। दुनिया और समाज में जहां पुरुषों का वर्चस्व है वही सिनेमा में भी पुरुषों के बजाय महिलाओं को कम महत्व दिया जाता है। सिंगदा देशमुख के एक लेख वुमन एंड इंडियन सिनेमा ए टेल ऑफ रिप्रेजेंटेशन द मिंट पोस्ट के अनुसार "लिंग असमानता दोनों जगह सिनेमा व समाज में भी देखने को मिलती है। सिनेमा में निर्देशक या निर्माताओं की स्थिति में अनुपात को देखकर सहज ही कहा जा सकता है।" (सिंगदा देशमुख)

सिनेमा का प्रभाव जादुई है क्योंकि यह बहुत बड़े और लंबे काल को चंद घंटों में दिखाने की क्षमता रखता है। सिनेमा अपने प्रभाव से समाज में प्रतिदिन नए विमर्श खड़े करता है, विभिन्न संस्कृतियों से मिलवाता है। सिनेमा और फिल्मों में दिखाए जाने वाले नायक नायिका और पूरी फिल्म की कहानी किसी ने किसी क्षेत्र विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें किसी समाज विशेष या संस्कृति विशेष के रीति रिवाज हमारे सामने आते हैं। एडवर्ड टी टायलर के अनुसार "संस्कृति, ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, न्याय, रीति-रिवाज तथा अन्य प्रवृतियां जिन्हें मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते प्राप्त करता है इन सब का सम्मिश्रण है।" (एडवर्ड टी टायलर)

हरियाणा भी एक समृद्ध सांस्कृतिक और पुरातन इकाई है जिसके प्रमाण हमें विश्व के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद में रज हरियाणे के रूप में मिलता है। (ऋग्वेद, 56)

सिनेमा भी अपने आप को इस संस्कृति से दूर नहीं रख सका, जिसके प्रमाण हमे भारतीय भाषाओं में बनने वाली या अनुवादित होने वाली फिल्मों में हरियाणवी पात्र के होने से मिल जाता है, क्योंकि यहां विभिन्न विचारधाराएं परंपरा के गुण देखे जाते है जिन्होंने सिनेमा को भी अपनी तरफ आकर्षित किया है "हरियाणा के जनजीवन में जिंदगी विभिन्न रूपों में

PURVA MIMAANSA

मुस्कुराती और खिलखिलाती दिखाई देती है।" (डॉ के सी यादव)

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 2015 से 2020 तक की प्रतिवर्ष एक ऐसी फिल्म का चयन किया है जो हरियाणवी पृष्ठभूमि पर बनी है। इन फिल्मों में महिलाओं की छवि किस प्रकार की दिखाई गई है और हरियाणवी महिलाओं को लेकर सिनेमा कैसा विमर्श खड़ा कर रहा है। इन फिल्मों में NH-10, गुड़गांव, गुड्डू रंगीला, लाल रंग, एसपी चौहान और छलांग का चयन किया गया।

साहित्यिक अवलोकन

आकांक्षा शर्मा (2011) ने "100 इयर्स ऑफ प्रेजेंट और अब्सेंस हिंदी वर्सेस हरियाणवी सिनेमा" शोध का उद्देश्य यह पता करना था कि मुंबई के मुकाबले हरियाणवी सिनेमा की राजनीतिक और आर्थिक स्थिति कैसी है। परिणाम सामने आया कि हिंदी सिनेमा में हरियाणा की स्टीरियोटाइप छवि दिखाई जाती है। हरियाणवी सिनेमा के सामने कई समस्याएं हैं जैसे प्रांत की फिल्म पॉलिसी का अभाव, अनुभवी फिल्म निर्माताओं की कमी और उनको मिलने वाली सहयोग राशि की कमी, अच्छे सिनेमा के माहौल की कमी, शूटिंग और तकनीकी सुविधाओं का अभाव व सिनेमा के व्यवसायीकरण की कमी इस की विफलता का एक बड़ा कारण रहा है लेकिन फिर भी हरियाणा अपनी संस्कृति उद्योग को पुनर्जीवित करने वह एक कला अनुकूलन वातावरण बनाने की कोशिश कर रहा है, और हरियाणवी फिल्में इन सभी को एक अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। (आकांक्षा शर्मा)

हरियाणवी और हिंदी सिनेमा का अध्ययन करते हुए सिनेमा के अच्छे वातावरण के लिए विकल्प सामने आते हैं लेकिन सिनेमा कैसा हो, किस प्रकार की फिल्में बननी चाहिए, किस प्रकार के विचारधारा को पोषित किया जा रहा है और हिंदी सिनेमा में किस तरीके से महिला और पुरुषों की समानता का अध्ययन करना जरूरी हो जाता है।

निधि शेनदूरनीकर टेरे (2012) द्वारा "जेंडर रिफ्लेक्शन इन मेंस्ट्रीम हिंदी सिनेमा" नामक अध्ययन में यह पता लगाना था कि बॉलीवुड की मुख्यधारा में महिला पात्रों का प्रतिनिधित्व कैसा है? जिसके लिए लोकप्रिय फिल्मों का विश्लेषण कर स्टीरियोटाइप की प्रक्रिया को समझा गया। यह जानने का प्रयास भी रहा कि सिनेमा द्वारा स्टीरियो टाइप छवि में सहायता करना समाज के लिए कहां तक उचित है। शोध में परिणाम सामने आया कि पुरुष विचार के बिंदु से सिनेमा में नारीत्व की रचना की गई और सिनेमा पर पैतृक मूल्य के प्रतिनिधित्व के बावजूद महिलाओं को विभिन्न शहरों में चित्रित करने में भी सफलता पाई है। यह शोध अध्ययन हिंदी सिनेमा में महिलाओं की छवि का अध्ययन करता नजर आया। (निधि सेनदूरनिकर)

भारतीय सिनेमा में महिलाओं की छवि को भी पुरुष प्रधानता के साथ दिखाया जाता है क्षेत्रीय सिनेमा में यह स्थिति किस प्रकार की हो सकती है इसके लिए आदित्य (2014) ने अपने लेख "पोट्रयाल ऑफ वुमन इन हरियाणवी सिनेमा द क्यूरियस केस ऑफ लाडो" में महिला पात्रों के चित्रण और उनकी सामाजिक स्थिति से जुड़ने की कोशिश की गई। लाडो फिल्म में दर्शाई गई सामाजिक पृष्ठभूमि और महिलाओं के संबंध में सामान्य विचार प्रक्रिया को निर्धारित करने

वाले विषयों के रूप में पहचाना गया। निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि कई राज्यों में अच्छे क्षेत्रीय सिनेमा का विकास उनके सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ एक सामाजिक परिवर्तन के दायित्व में महत्वपूर्ण साबित हुआ है। हरियाणा को भी इस तरह के सांस्कृतिक आंदोलन की सख्त जरूरत है और सिनेमा इस तरह की पहल में मुख्य भूमिका निभा सकता है। (आदित्य)

उक्त अध्ययन से सांस्कृतिक आंदोलन के लिए सिनेमा को एक महत्वपूर्ण भूमिका के रूप में दिखाया गया है। परंतु क्या क्षेत्रीय सिनेमा इस आंदोलन के लिए अपनी योग्यता रखता है, क्षेत्रीय सिनेमा के सामने आने वाली चुनौतियां क्या हो सकती हैं?

प्रदीप कुमार, सोनिया सोनी (2016) "रीजनल सिनेमा चैलेंज एंड स्कोप स्टडी इन कांटेक्स्ट ऑफ हरियाणवी सिनेमा" नामक शोध का उद्देश्य यह देखना था कि प्रतिभा होते हुए भी हरियाणा में क्षेत्रीय सिनेमा की कमी क्यों है? और इस की विफलता के क्या कारण है? अध्ययन में सामने आया कि समस्याएं कई है जैसे स्क्रीन की कम संख्या, फिल्म नीति का अभाव, बुनियादी सुविधा की कमी जैसे स्टूडियो, फिल्म लैब, खराब गुणवत्ता वाली प्रोडक्शन। इनके सुधार के साथ निर्माताओं के लिए शूटिंग को प्रोत्साहन देने पर भी काम हो तो हरियाणवी सिनेमा को ऊंचाइयां दी जा सकती हैं। (प्रदीप कुमार, सोनिया सोनी)

इन तमाम सुधारो के साथ हिंदी सिनेमा ने क्षेत्रीय सिनेमा की तरफ अपना रुख किया। उन्होंने क्षेत्रीय सिनेमा को किस तरीके से प्रदर्शित किया है?

सीमा राणा (2018) ने "रिप्रेजेंटेशन ऑफ़ हरियाणवी कल्चर इन बॉलीवुड विद स्पेशल रेफरेंस टू विशाल भारद्वाज मूवी मटरू की बिजली का मंडोला" नामक शोध अध्ययन में फिल्म का गहन व सूक्ष्म अध्ययन किया गया कि किस प्रकार मंडोला के लोग अपना जीवन व्यतीत करते हैं, उनके रहन-सहन, परंपराओं, संस्कृति आदि का सुंदर प्रस्तुतीकरण किया गया। फिल्म के टाइटल में मंडोला गांव के नाम का समावेशन निर्माता की समझ और वास्तविकता के नजदीक रखने का अच्छा प्रयास है। फिल्म के माध्यम से एक उद्योगपति की लूट और लालच से लड़ते लोगों को दिखाया गया है। विशाल भारद्वाज का यह प्रशंसनीय कदम रहा कि हरियाणा की संस्कृति और सामाजिक स्थिति को बड़े पर्दे पर उन्होंने सकारात्मक रूप से दिखाने का प्रयास किया। (सीमा राणा)

प्रस्तुत अध्ययन में हरियाणवी महिलाओं की छवि और उसकी प्रस्तुति को जानने व समझने के लिए किया गया है।

शोध उद्देश्य

1. इस बात का पता लगाना कि हिंदी फिल्मों में हरियाणवी महिलाओं की छवि किस प्रकार प्रस्तुत की गई है।
2. इस बात का पता लगाना कि हिंदी फिल्मों में हरियाणवी महिलाओं की सामाजिक और व्यवहारिक प्रस्तुति कैसी है।

प्रकल्पना

1. हरियाणवी महिलाओं को समृद्ध, खुशहाल, शिक्षित, प्रभावशाली और सक्षम दर्शाते हुए चित्रांकन किया गया है।

PURVA MIMAANSA

ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue March 2023 | Impact Factor 5.320

2. हरियाणवी महिलाओं की छवि रूढ़िवादी, गंवार, अशिक्षित और लड़ाकू प्रवृत्ति की दिखाई गई है।

विधि

इस अध्ययन के लिए 2015 से 2020 तक की हिंदी फिल्में 'NH-10', 'गुड़गांव', 'गुड्डू रंगीला', 'लाल रंग', 'एसपी चौहान' और 'छलांग' का चयन कर बार बार देखा गया और निर्धारित चर का प्रयोग करते हुए अंतर्वस्तु विश्लेषण विधि द्वारा आंकड़ा संग्रह किया गया।

महिलाओं की दर्शाई गई छवि का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित चरों का प्रयोग किया गया है।

पहली श्रेणी में महिलाओं की छवि को दर्शाने वाले तत्वों जैसे सशक्तिकरण, शिक्षा, प्रेरणादायी, आत्मविश्वास हैं। इन फिल्मों में मुख्य भूमिका और सहायक भूमिका में 23 महिला पात्रों का प्रस्तुतिकरण है जिनके चित्रांकन और संवाद अदायगी के समय का अध्ययन और उनके द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा और शब्द चयन के अनुसार भी आंकड़ा एकत्रित किया गया है।

महिलाओं की वैवाहिक और सामाजिक स्थिति का अध्ययन करते हुए पात्रों के व्यवहार को दर्शाने वाले सकारात्मक और नकारात्मक गुणों के माध्यम से फिल्मों का बार-बार अवलोकन कर आंकड़ों का संग्रह किया गया।

विश्लेषण

MIMAANSA

1. Representation of Haryanvi Woman in Hindi Cinema

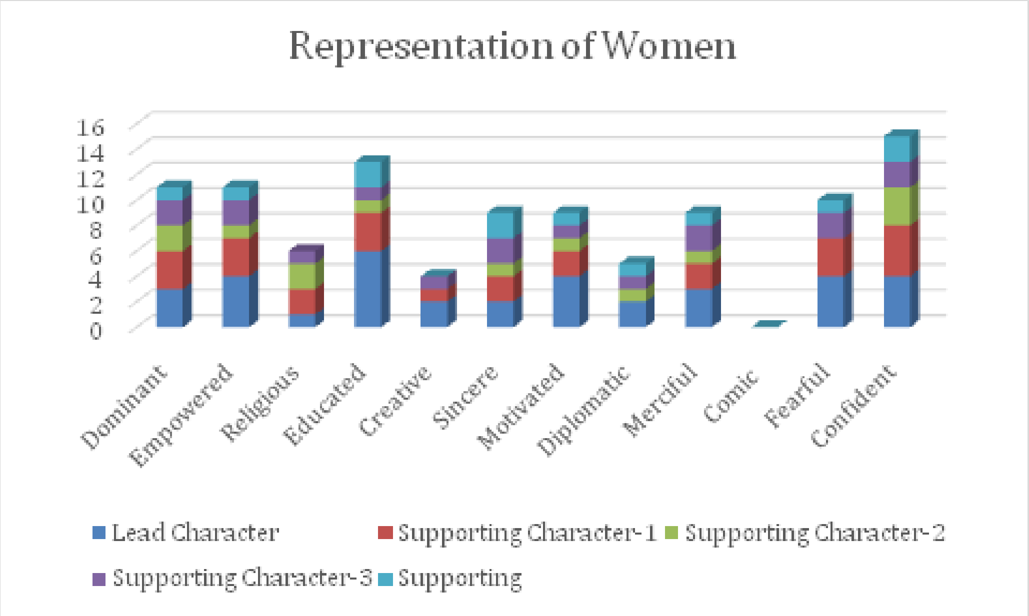

तालिका 1 के अनुसार हरियाणवी महिलाओं के 15 पात्रों को आत्मविश्वासी 13 को शिक्षित और 11 को प्रभावशाली और सशक्त दिखाया गया है परंतु उनमें रचनात्मकता और चातुर्य का गुण 3 में ही दिखाया गया। मुख्य भूमिका वाली महिला 6 पात्रों को शिक्षित और 4 पात्रों को आत्मविश्वासी, सशक्त और निर्भीक छवि में दर्शाया गया है। वहीं द्वितीय भूमिका वाली महिला पात्रों में 10 को शिक्षित दिखाया गया और 12 पात्रों को आत्मविश्वास से भरा और 8 को प्रभावी और सशक्त दिखाया गया है। जिस प्रकार हरियाणा में सामान्य और आम महिला अपने जन जीवन की समस्याओं को सुलझाते हुए अपनी शैक्षणिक योग्यताओं का लाभ उठाते हुए अपने आप को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं, ठीक उसी प्रकार फिल्म निर्देशक हंसल मेहता ने मुख्य पात्र निलीमा(नुशरत भरुचा) को शिक्षित, आत्मविश्वास, सशक्त और प्रभावी भूमिका में प्रस्तुत किया जोकि एक आम पढ़ी लिखी महिला में गुण अक्सर देखने को मिलते हैं वैसे गुण अपने मुख्य पात्र में निर्देशक द्वारा सहजता के साथ दर्शाए गए। वहीं द्वितीयक भूमिका वाले उषा गहलोत, साक्षी मेहरा, कमलेश हुड्डा और पिंकी यादव को आम जन जीवन में आने वाली सभी समस्याओं को सहजता के साथ सुलझाते हुए अपनी सशक्त, प्रभावी और आत्मविश्वास से भरपूर चरित्रों का प्रदर्शन किया। महिलाओं की ऐसी छवि को दर्शकों द्वारा भी खूब सराहा गया, जिसका सहज अंदाजा फिल्म की सफलता से लगाया जा सकता है, जो सामान्य रूप से हरियाणा के किसी भी कोने में देखने में आता है।

तालिका एक के अनुसार हमारी पहली प्रकल्पना सही सिद्ध होती है कि हरियाणवी महिलाओं को समृद्ध, खुशहाल, शिक्षित, प्रभावशाली और सक्षम दर्शाते हुए चित्रांकन किया गया है।

PURVA MIMAANSA

2. Status of Character

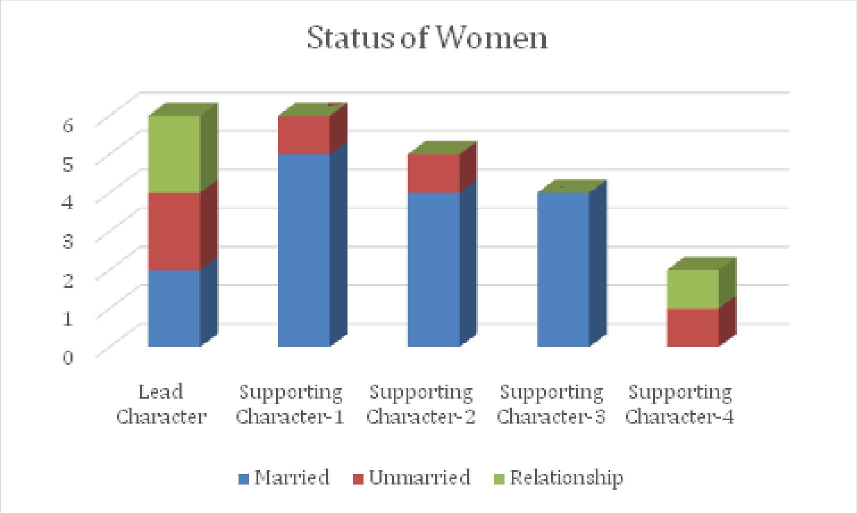

3. Role Play

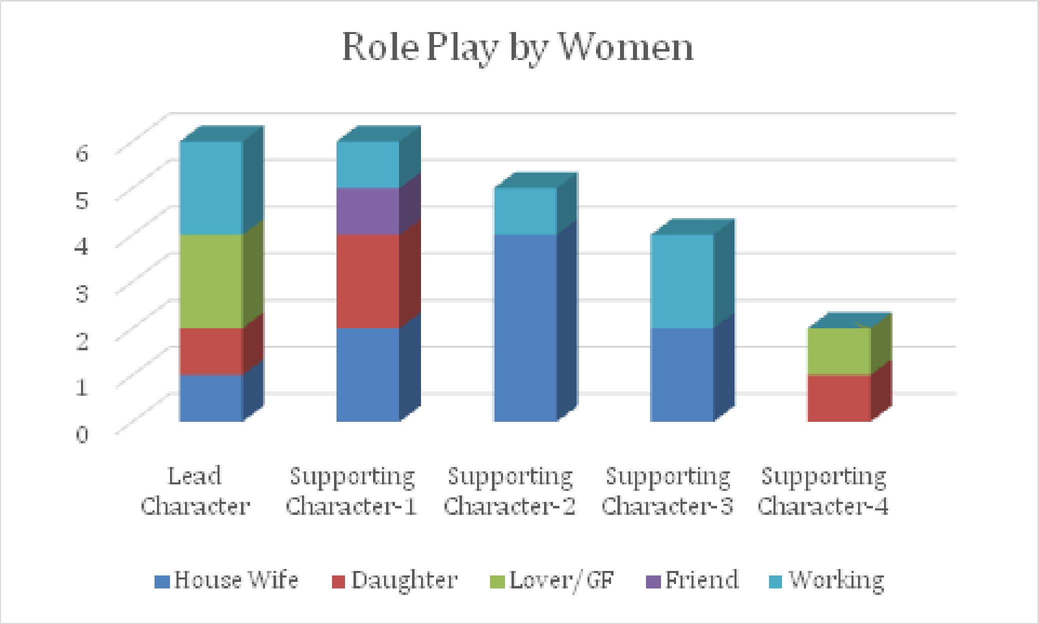

तालिका 2 और 3 के अनुसार इस अध्ययन में कुल 23 महिला पात्रों में से 15 को शादीशुदा दिखाया गया है जिनमें सर्वाधिक महिलाओं को ग्रहणी और कामकाजी महिला के रूप में ही दिखाया गया है। फिल्म निर्देशक मनोज झा ने अपनी फिल्म एसपी चौहान में द्वितीयक भूमिका में नजर आने वाली सरिता (श्रेया राजपूत) जो की मुख्य पात्र एसपी चौहान (जिम्मी शेरगिल) की अच्छी दोस्त है और हर कदम पर आंखें बंद करके अपने दोस्त का साथ देती है। फिल्म की कहानी सामाजिक समस्याओं के लिए आम जनमानस को जागरूक करती कहानी है। सामान्य रूप से हरियाणा में लड़का लड़की की दोस्ती को सहजता से स्वीकार नहीं किया जाता ठीक उसी प्रकार अध्ययन में सम्मिलित 6 फिल्मों में से एकमात्र एसपी चौहान ऐसी फिल्म थी जिसमें एक लड़का लड़की को अच्छे दोस्त के रूप में दिखाया गया है। सामान्य रूप से हरियाणा में जिस प्रकार महिला में ग्रहणी और काम के प्रति निष्ठा के गुण झलकते हैं, सभी फिल्मों में महिला की ग्रहणी और कामकाजी महिला जैसी भूमिकाओं को प्रमुखता दी गई है, जो हरियाणा को वास्तविकता के साथ दिखाने का प्रयास है।

4. Language used

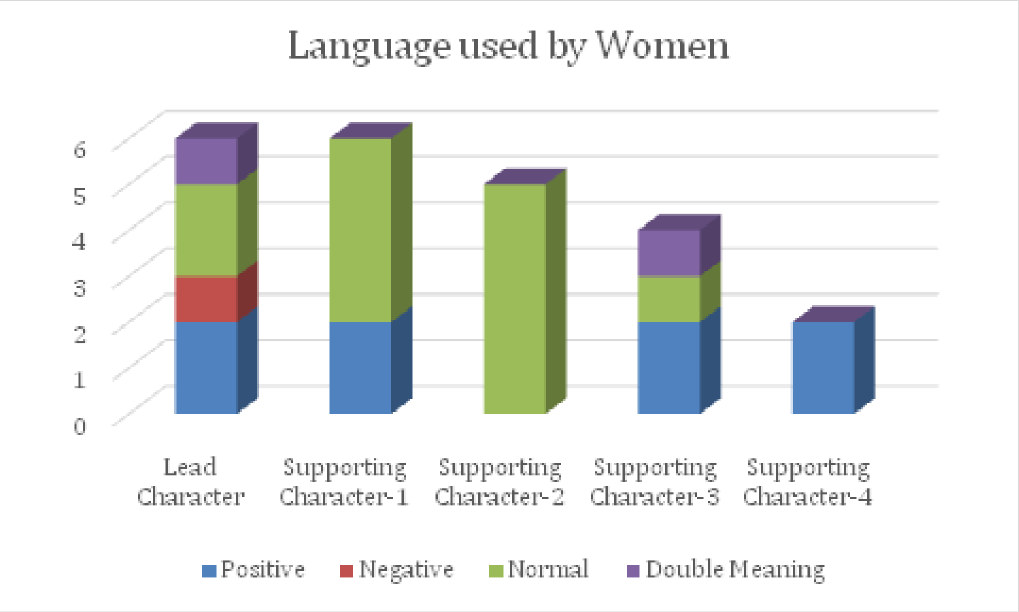

तालिका 4 के अनुसार हरियाणवी महिला पात्रों द्वारा सामान्यतः प्रयोग होने वाले प्रेम, ममता, कोमलता, दया भाव और देखभाल को प्रदर्शित करने वाले शब्दों का चयन सर्वाधिक 13 पात्रों द्वारा किया गया। नकारात्मक (गाली गलोच) और द्विभाषी शब्द चयन का प्रयोग केवल दो पात्रों द्वारा किया गया है। फिल्म गुड़गांव में मुख्य पात्र प्रीति (रागिनी खन्ना) का जब अपहरण हो जाता है, वह वहां से निकलती है और बस से अपने घर जा रही होती है प्रीति मानसिक रूप से परेशान है और अपनी भाई की गलती पर क्रोधित भी है। बस में किसी ने प्रीति के साथ बदतमीजी की वहां पर वह गाली देते हुए बस को रुकवाती है और बस में बैठे तमाम लोगों को ताना भी मरती है कि ऐसे ही बैठे रहना। यहां पर आत्मरक्षा और आत्मसम्मान के लिए प्रीति इस तरीके की भाषा का प्रयोग करती है जोकि आत्मसम्मान और आत्म रक्षा के लिए उठाया गया कदम है। वहीं फिल्म NH10 की बात करें तो मीरा (अनुष्का शर्मा) के पति को मार दिया जाता है। मीरा अपनी रक्षा और गुस्से में इस प्रकार के शब्दों का चयन करती नजर आई जोकि महानगर में रहने वाली एक कामकाजी महिला का पात्र है ना कि हरियाणवी महिला का। अन्य किसी पात्र द्वारा नकारात्मक शब्दों या द्विभाषी शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया। हरियाणवी महिलाओं की भूमिका में ज्यादातर किरदारों द्वारा सकारात्मक यानी कि सभ्य, प्रेम से भरपूर, दया, देखभाल और कोमलता झलकाने वाले शब्दों का चयन किया गया है। इन फिल्मों में सामान्यतः हरियाणवी बोली के खादर क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली का चयन किया गया है अन्य किसी भी प्रकार की हरियाणवी का प्रयोग नहीं हुआ है। महिला पात्रों द्वारा

हरियाणवी बोली के शब्द उच्चारण में बोलने के ढंग में लगभग सभी पात्रों द्वारा हरियाणवी बोली के खादर स्वरूप को सकारात्मक रूप से पर्दे पर जीवंत किया है।

5. Character Change

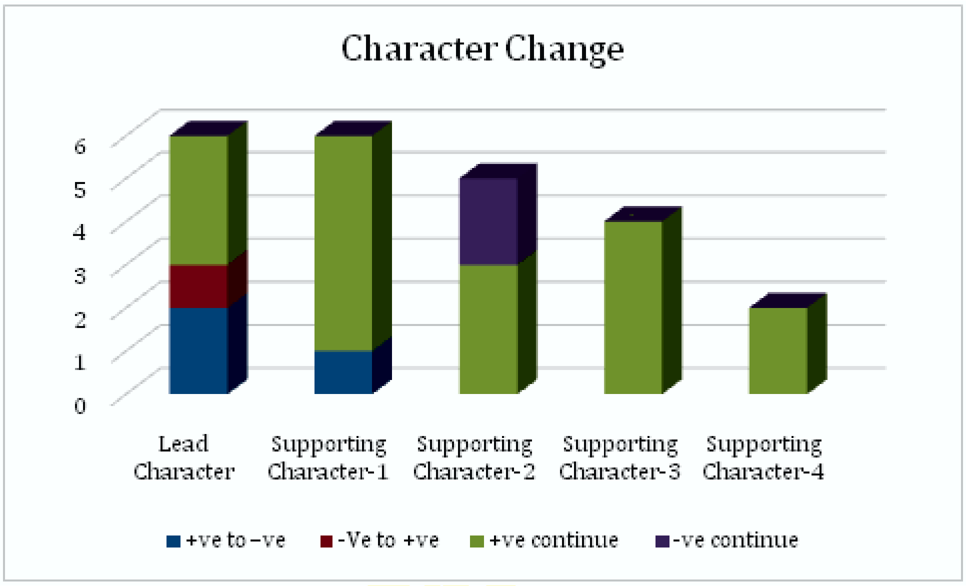

तालिका 5 के अनुसार इन फिल्मों में हरियाणवी पात्रों में 17 पात्र शुरू से अंत तक सकारात्मक ही बने रहे 3 पात्र सकारात्मक से नकारात्मक हुए 2 पात्र नकारात्मक बने रहे परंतु 1 पात्र नकारात्मक से सकारात्मक हुआ। फिल्म गुड्डू रंगीला में मुख्य पात्र बेबी (आदित्य राव हैदरी) शुरुआत में अपना खुद का अपहरण करवाती है ताकि अपने जीजा से पैसे वसूल सके और इसके लिए मुख्य अभिनेता गुड्डू (अमित साध) और रंगीला (अरशद वारसी) का प्रयोग करती है। अपहरण को कानून के नजरिए से देखें तो यह एक गंभीर अपराध है जो समाज में व्यवहारिक दृष्टि से भय और आतंक को परिभाषित करता है, और जो किरदार इस तरह की घटना को अंजाम देते हैं वह अपराधी ही नजर आएगा। दूसरे पक्ष से देखें तो किसी भी व्यक्ति का समय के लाभ या लालच के चलते पैसे कमाने के हेतु से किसी अन्य व्यक्ति का प्रयोग करना सामाजिक दृष्टि से नकारात्मक संदेश देता है। समाज में नकारात्मक घटनाएं जैसे अपहरण, फिरौती, वसूली, गुंडागर्दी, लूटमार आदि किसी भी परिपेक्ष में नजर आते हैं तो यह है समाज में नकारात्मक संदेश को भी प्रसारित करता है। फिल्म के अंत तक पहुंचते-पहुंचते बेबी का किरदार नकारात्मक से सकारात्मक भूमिका में दर्शकों के सामने प्रदर्शित होता है। अध्ययन के लिए

Purva Mimaansa | Refereed | Peer Reviewed
ISSN: 0976-0237 | Volume 14, Issue March 2023 | Impact Factor 5.320

चयन की गई सभी 6 फिल्मों से 17 हरियाणवी महिला पात्र शुरू से अंत तक सकारात्मक भूमिका में ही नजर आए जो किसी प्रकार की है असामाजिक एवं गैर कानूनी गतिविधि में संलिप्त नहीं थे। जो हरियाणा की सीधी साधी जिंदगी और स्पष्ट मनोभाव की वृति को दर्शाता है।

6. Nature of Character

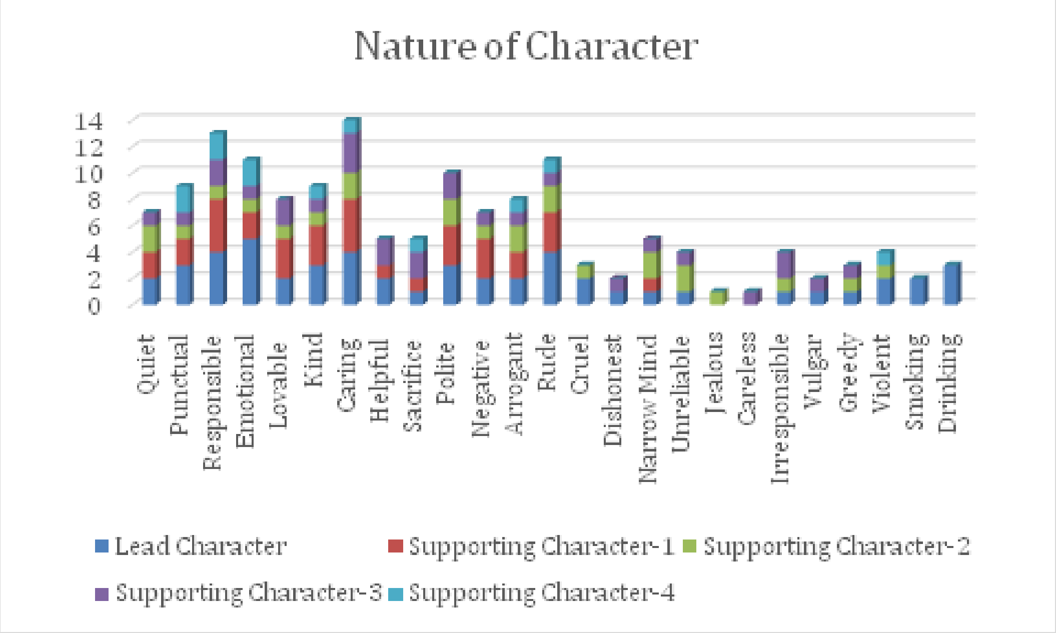

तालिका 6 के अनुसार सकारात्मक व्यवहारिक गुणों के प्रदर्शन में सर्वाधिक 14 पात्रों को देखभाल करने वाली और संवेदनशील नारी के रूप में दिखाया गया है, 13 महिला पात्रों में जिम्मेदारी,11 को भावनात्मक, 10 में नम्रता, 9 में दयालुता और समय की उपयोगिता करते दर्शाया गया है। वहीं नकारात्मक व्यवहारिक गुणों में 11 पात्रों को अशिष्टाचारी, 8 को अकड़ स्वभाव का, 5 को संकीर्ण मानसिकता, 4 को अविश्वसनीय, लालची और आक्रामक दिखाया गया है। केवल 1 पात्र में लापरवाह और बेईमान छवि के रूप में दर्शाया गया है। फिल्म लाल रंग में नीलम मैडम (श्रेया नारायण) को एक गैर जिम्मेदार कर्मचारी के रूप में दिखाया है जो लापरवाह और रिश्वतखोर है। फिल्म NH10 में अम्मा जी (दीप्ति नवल) लालची, आक्रामक, अविश्वसनीय, अकड़, घमंडी और क्रूरता से भरी महिला सरपंच की भूमिका में दिखाया गया है। वही बात करें सकारात्मक किरदार की तो फिल्म छलांग में मोंटू की माताजी (कमलेश हुड्डा) शांत, समय की पाबंद, जिम्मेदार, दयालु और त्याग करने वाली माता के रूप में दिखाया गया

https://pm.sdcollegeambala.ac.in

है। फिल्म छलांग में नीलिमा (नुशरत भरुचा) पढ़ी-लिखी अध्यापिका जो जिम्मेदार, प्रेमपूर्ण, दयालु, चिंता करने वाली, मददगार, त्यागपूर्ण, शांत और नम्रता जैसे गुणों के साथ अपने सुलझे हुए व्यक्तित्व का परिचय कराती है जोकि महिलाओं की सकारात्मक छवि को प्रदर्शित करती है। फिल्म गुड़गांव में प्रीति (रागिनी खन्ना) पढ़ी-लिखी, सशक्त, प्रभावी और अपने पैरों पर खड़े होने वाली आधुनिक लड़की के रूप में दिखाया गया है।

तालिका 6 के अनुसार हमारी दूसरी प्रकल्पना गलत साबित होती है कि हरियाणवी महिलाओं की छवि रूढ़िवादी, गंवार, अशिक्षित और लड़ाकू प्रवृत्ति की दिखाई गई है।

7. Video time duration of women character in Films

	Total Film Duration	Lead Character (Video Time)	Supporting Character (Video Time)	Total
NH-10	105	85:33	16:18	101:51
Guddu Rangeela	114	18:45	14:58	33:43
Lal Rang	139	28:17	8:18	36:35
Gurganv	98	19:27	13:40	33:07
SP Chauhan	118	29:45	28:40	58:25
Chhalaang	126	37:37	21:39	59:16
Total	700	219:24	103:33	322:57

PURVA MIMAANSA

8. Dialogue time duration of women character in films

	Total film Duration	Lead Character (Audio Time)	Supporting Character (Audio Time)	Total
NH-10	105	12:36	2:27	15:03
Guddu Rangeela	114	3:35	3:20	6:55
Lal Rang	139	9:59	5:29	15:28
Gurganv	98	4:25	2:08	6:33
SP Chauhan	118	6:27	17:15	23:42
Chhalaang	126	7:56	6:40	14:36
Total	700	44:58	37:19	82:17

तालिका 7 के अनुसार सभी फिल्मों का औसतन स्क्रीन और ऑडियो टाइम कुल समय का 31.3 प्रतिशत मुख्य नायिका को दिया गया जबकि 6.4 प्रतिशत समय उनके संवाद अदायगी के लिए रखा गया। द्वितीय भूमिका में नजर आने वाले नायिकाओं के लिए स्क्रीनिंग टाइम 14.8 प्रतिशत दिया गया व उनके संवाद को 5.3 प्रतिशत दिया गया। सभी फिल्मों को देखे तो मुख्य और महिला पात्रों को 322 मिनट और 57 सेकंड स्क्रीन पर समय दिया गया है वही उनके ऑडियो के समय को 82 मिनट 17 सेकंड का टाइम दिया गया है। फिल्मों में महिला पात्रों को कुल समय का 46.13 प्रतिशत समय स्क्रीन पर दर्शाया गया और उनके संवाद अदायगी के समय को 11.7 प्रतिशत समय दिया गया है।

कुल स्क्रीनिंग टाइम को देखें तो यह समय फिल्म का आधे से कम है परंतु इस समय में जो प्रस्तुति दी गई है वह सकारात्मक, सशक्त और प्रभावी भूमिका के साथ दी गई है। महिलाओं के विचारों को पुष्टि प्रदान करने और उनके हकों अधिकारों को फिल्मों में चित्रित कर स्त्रियों के पक्ष में माहौल बनाने और स्त्रियों में जागृति लाने का काम फिल्मों ने बखूबी किया है। प्रजनन संबंधी अधिकार, घरेलू हिंसा, मातृत्व, यौन उत्पीड़न,

भेदभाव आदि विषयों पर फिल्मों ने बारीकी से प्रकाश डाला है और इन विषयों को चित्रित करने वाली फिल्में नारीवादी फिल्म सिद्धांत की मानी जाते हैं।

परिणाम

तालिकाओं के अध्ययन से पता चलता है कि स्क्रीन पर दिया जाने वाला समय या भूमिका पुरुषों की तुलना में कमतर पाई गई है जो कि पुरुषों की प्रधानता जिस प्रकार समाज में है वैसे ही फिल्मों में भी स्पष्ट रूप से देखने में मिलती है लेकिन महिलाओं की छवि को जिस प्रकार से दर्शाया गया है वह हमारी प्रकल्पना 2 को निरस्त करता है और प्रकल्पना 1 हरियाणवी महिलाओं की छवि समृद्ध, खुशहाल, शिक्षित, प्रभावशाली और सक्षम दिखाया गया है। फिल्मों में नारी से जुड़े छोटे-बड़े पहलुओं पर बारीकी से प्रकाश डाला गया है। उस के माध्यम से नारी मन के हर हिस्से का दर्शन दुनिया को करवाने की कोशिश की है उन्हें नारीवादी फिल्मों के माध्यम से खोलने का भी प्रयास किया गया है। "विश्व के सार्थक सिनेमा का इतिहास हमें बताता है कि चाहे नारी रहस्य कथा हो या मुक्ति कथा अनेक पुरुष फिल्मकारों ने पर्दे पर आधुनिक स्त्री की महत्वपूर्ण छवि प्रस्तुत की है। स्वीडन के फिल्मकार इंगमर बरगमन हो या भारत के सत्यजीत राय इन फिल्मकारों ने अपनी नायिकाओं को कैमरे की एक अद्भुत रोशनी में देखा है। श्याम बेनेगल 27 सालों से फिल्में बना रहे हैं। विज्ञापन फिल्मों की दुनिया से उभरे इस फिल्मकार ने या तो नायिका प्रधान सशक्त फिल्में बनाई हैं या संदेश प्रधान सपाट फिल्मों की दुनिया को हरा-भरा करने की कोशिश की है।" (विनोद भारद्वाज)

निष्कर्ष

हिंदी फिल्मों में 2015 से 2020 तक आई इन 6 फिल्मों में हरियाणवी महिला किरदारों को सर्वाधिक रूप से देखरेख करने वाली, संवेदनशील, आत्मविश्वासी, शिक्षित, सशक्त और प्रभावशाली दिखाया गया है। वहीं उनकी वैवाहिक स्थिति में शादीशुदा ग्रहणी के रूप में और कामकाजी महिला के रूप में दिखाकर सक्षम और आत्मनिर्भरता का परिचय देती दिखाई दी। यह शोध अध्ययन महिलाओं द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों के चयन में भी महिलाओं के प्रति सार्थकता बरतता नजर आया ज्यादातर पात्रों ने सकारात्मक शब्दों का चयन किया गया है जो हरियाणा की रूढ़िवादी और ग्रामीण आंचल की बहुलता होते हुए भी उनमें शिष्टाचार और नम्रता के गुणों के साथ-साथ उनके शिक्षित और सभ्य वातावरण की झलक दिखला रही है। जिस प्रकार साहित्य के बहुत बड़े हिस्से को महिलाओं के अधिकारों की इस लड़ाई ने प्रभावित किया है ठीक वैसे ही फिल्मी दुनिया को भी इस लड़ाई में काफी प्रभावित किया है।

संदर्भ सूची

तस्माय लाहा रॉय. (2018). इंडियन फिल्म इंडस्ट्री ग्रो एट 27 प्रतिशत इन 2017. एफ आई सी सी आई. moneycontrol.com

PURVA MIMAANSA

सिंगदा देशमुख. (2020). वुमन एंड इंडियन सिनेमा ए टेल ऑफ रिप्रेजेंटेशन. द मिंट पोस्ट.

एडवर्ड टी टायलर. लंदन जे मुरे. 1729. पृष्ठ 1.

ऋग्वेद. अध्याय 5. पाठ 3. खण्ड 15. संख्या 56.

डॉ के सी यादव. हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति. पृष्ठ 190.

आकांक्षा शर्मा. (2011). 100 ईयर ऑफ प्रेसेंस और एब्सेंस? हिंदी वर्सेस हरियाणवी सिनेमा. जर्नल ऑफ क्रिएटिव कम्युनिकेशन. 6. 163-178. doi:10.1177/0973258613499097.

निधि सेनदूरनिकर. (2012). जेंडर रिफ्लेक्शन इन मेंस्ट्रीम हिंदी सिनेमा. ग्लोबल मीडिया जर्नल. 3.1-9.

आदित्य. (2014). पोर्टल ऑफ वुमन इन हरियाणवी सिनेमा: द क्यूरियस केस ऑफ लाडो. एकेडमीकी.

प्रदीप कुमार. सोनिया सोनी. (2016). रीजनल सिनेमा: चैलेंज एंड स्कोप स्टडी इन कॉन्टेक्स्ट ऑफ हरियाणवी सिनेमा. एकेडमिक डिस्कोर्स. 5(1). 93-99.

सीमा राणा. (2018). रिप्रेजेंटेशन ऑफ़ हरियाणवी कल्चर इन बॉलीवुड विद स्पेशल रेफरेंस टू विशाल भारद्वाज मूवी-मटरू की बिजली का मंडोला. इंटरनेशनल जर्नल आफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इन्नोवेटिव रिसर्च. 5(9). 33-36.

विनोद भारद्वाज. (2006). सिनेमा: कल, आज, कल. वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली. पृष्ठ 432.

हिन्दी सिनेमा | भारतकोश. (2022).
Google. https://bit.ly/3vSpky1.

PURVA MIMAANSA